नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तक एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव®

बुक्स

संस्कृत-IX

(कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 260/-

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

संस्कृत–कक्षा 9

परीक्षा	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	पूर्णांक
सैद्धान्तिक	3.15 होरा:	100	100

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	अपठितावबोधनम्	15
2.	रचनात्मकम् कार्यम्	25
3.	व्याकरणम्	25
4.	पठितावबोधनम् (शेमुषी प्रथमो भाग:)	35
	कुल	100

पुस्तक का नाम : शेमुषी प्रथमो भाग:

इकाई संख्या	विषयवस्तु	अंकभार
1. अपठितावबोधनम्		**10 + 5 = 15**
	(क) 80-100 शब्द परिमित: सरल अपठित गद्यांश:	
	(i) शीर्षक दानम्	**01**
	(ii) एकपदेन उत्तरम्	**½ × 4 = 02**
	(iii) पूर्णवाक्येन उत्तरम्	**1 × 3 = 03**
	(iv) अनुच्छेदाधारितं भाषिक कार्यम्	**1 × 4 = 04**
	(ख) 40-50 शब्द परिमित: सरल अपठित गद्यांश:	
	(i) एकपदेन उत्तरम्	**½ × 2 = 01**
	(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरम्	**1 × 2 = 02**
	(iii) अनुच्छेदाधारितं भाषिक कार्यम्	**1 × 2 = 02**
	भाषिक कार्यम् इत्येनम् अभिप्रेतम् अस्ति	
	(i) वाक्ये कर्तृ-क्रिया पदचयनम्	
	(ii) कर्तृ क्रिया अन्विति:	
	(iii) विशेषण विशेष्य: अन्विति:	
	(iv) संज्ञास्थाने सर्वनामप्रयोग: अथवा सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोग:	
	(v) पर्यायं विलोमं वा पदं दत्त्वा अनुच्छेदे दत्तं पदचयनम्	

2. रचनात्मकं कार्यम्		**25**
	(i) संकेताधारित अभिनन्दनपत्रम्/वर्धापनपत्रम्/ निमन्त्रणपत्रम्/प्राचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम्	**5**
	(ii) संकेताधारितः वार्तालापः अथवा अनुच्छेदलेखनम्	**5**
	(iii) संकेताधारितं चित्रवर्णनम्	**5**
	(iv) कथाक्रम संयोजनम् (क्रमरहितानाम् अष्टवाक्यानां क्रमपूर्वक संयोजनम्)	**04**
	(v) अनुवाद कार्यम्-हिन्दीभाषायाः अष्टवाक्येषु षड्वाक्यानां संस्कृते अनुवादः	**06**
3. व्याकरणम्	बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नाः, लघूत्तरात्मक प्रश्नाः च	**25**
	(i) वाक्येषु अनुच्छेदे वा सन्धिकार्यम् (सन्धि, सन्धि विच्छेदः) (क) स्वरसन्धिः दीर्घः, गुणः, वृद्धिः, यण् (ख) विसर्ग सन्धि—विसर्गस्य उत्त्वं, रुत्वं, लोपः, विसर्गस्थाने (श् ष् स्)	 **2** **2**
	(ii) समास ज्ञानम्—तत्पुरुषः, द्विगुः, बहुव्रीहिः, समासानाम् सामासिक पद निर्माणम्, समासविग्रहं च	**3**
	(iii) कारकम्—उपपदविभक्तीनाम् प्रयोगाः, अनुच्छेदे, वाक्येषु वा द्वितीयातः सप्तमी— विभक्तिपर्यन्तम् सामान्य परिचयः	**3**
	(iv) प्रत्ययाः—तुमुन्, क्त्वा, ल्यप्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, टाप्, तमप्, तरप्	**3**
	(v) धातु रूपाणिः—लट्, लोट्, लृट्, लङ्, विधिलिङ्लकारेषु परस्मैपदिनः-भू, पठ्, हस्, नम्। गम् (गच्छ्), अस्, हन्, क्रुध्, नश्, नृत्, इष्, पृच्छ्, कृ, ज्ञा, भक्ष्, चिन्त्, इत्यादयः। आत्मनेपदिनः—सेव्, लभ्, रुच्, मुद्, याच् (केवलं लट्लकारे) उभयपदिनः—नी, ह्व, (हर्) भज्, पच्।	**3**
	(vi) शब्दरूपाणि पुल्लिङ्गः अजन्ताः—अकारान्ताः (बालकवत्) इकारान्ताः (कविवत्) उकारान्ताः (साधुवत्)	**3**

	ऋकारान्ताः (पितृ, धातृवत्) हलन्ताः-राजन्, भवत् आत्मन्, विद्वस्, गच्छत् स्त्रीलिङ्गः अजन्ताः— आकारान्ताः (रमावत्) इकारान्ताः (मतिवत्) ईकारान्ताः (नदीवत्) ऋकारान्ताः (मातृवत्) नपुंसकलिङ्गः अजन्ताः— अकारान्ताः (फलवत्) उकारान्ताः (मधुवत्)	
	(vii) संख्यावाचक शब्दाः एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पञ्चन्	2
	(viii) सर्वनाम शब्दाः (क) यत्, तत्, किम्, इदम्, (त्रिषु लिङ्गेषु) (ख) अस्मद्, युष्मद्	2
	(ix) उपसर्गाः- सामान्यपरिचयः	2
4. पठितावबोधनम्—(शेमुषी प्रथमो भागः)		35
	(i) पाठ्यपुस्तकात् बहुचयनात्मक प्रश्नाः	1 × 7 = 7
	(ii) पाठ्यपुस्तकात् अंशद्वयम्—(एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः) (क) एकपदेन उत्तरम् ½ × 2 = 1 (ख) पूर्णवाक्येन् 1 × 2 = 2 (ग) भाषिककार्यम् 1 × 2 = 2	5 + 5 = 10
	(iii) पाठ्यपुस्तकात्—पद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् सप्रसङ्गम् भावार्थलेखनम्	3
	(iv) पाठ्यपुस्तकात् एकस्य गद्य पाठस्य हिन्दी भाषायां सार-लेखनम् (द्वयोः एकस्य)	4
	(v) प्रश्ननिर्माणम् (चत्वारः)	1 × 4 = 4
	(vi) एकस्य पद्यस्य अन्वयलेखनम्	2
	(vii) पाठ्यपुस्तकात् श्लोकद्वयलेखनम्	3
	(viii) शब्दार्थलेखनम् (चतुर्णाम्)	½ × 4 = 2

निर्धारित पुस्तक — शेमुषी प्रथमो भागः

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

शेमुषी (प्रथमो भागः)

	मङ्गलम्	1
1.	भारतीवसन्तगीतिः	2
2.	स्वर्णकाकः	11
3.	गोदोहनम्	24
4.	सूक्तिमौक्तिकम्	39
5.	भ्रान्तो बालः	51
6.	लौहतुला	62
7.	सिकतासेतुः	73
8.	जटायोः शौर्यम्	85
9.	पर्यावरणम्	98
10.	वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्	109
पाठ्यपुस्तकात् द्वौ श्लोकलेखनम्		119
अपठितावबोधनम्–		**120-144**
	(क) 80-100 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः	120-135
	(ख) 40-50 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः	135-144
रचनात्मकं कार्यम्–		
(i)	संकेताधारित अभिनन्दनपत्रम् / वर्धापनपत्रम् /निमन्त्रणपत्रम्/ प्राचार्यं प्रति प्रार्थना-पत्रम्	145-160
(ii)	(अ) संकेताधारिताः वार्तालापः	160-168
	(ब) अनुच्छेद-लेखनम्	168-173
(iii)	संकेताधारिताः चित्रवर्णनम्	173-182
(iv)	कथाक्रमसंयोजनम्	182-190
(v)	अनुवाद-कार्यम्	190-202
व्याकरणम्–		
	(i) सन्धिकार्यम्, (ii) समास-ज्ञानम्, (iii) कारकम्, (iv) प्रत्ययज्ञानम्, (v) धातुरूपाणि, (vi) शब्दरूपाणि, (vii) संख्यावाचक शब्दाः, (viii) सर्वनाम शब्दाः, (ix) उपसर्गाः	203-330

संस्कृत कक्षा-IX
शेमुषी (प्रथमो भागः)

मङ्गलम्

(1)

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥

अन्वय–यस्यां (भूमौ) समुद्रः, उत सिन्धुः आपः (सन्ति), यस्याम् अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः, यस्याम् इदं जिन्वति प्राणदेजत्, सा भूमिः नः पूर्वपेये दधातु।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ प्रदान करने की मंगल-कामना की गई है।

हिन्दी-अनुवाद–जिस (भूमि) में महासागर, नदियाँ और जलाशय (झील, सरोवर आदि) विद्यमान हैं, जिसमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ उपजते हैं तथा कृषि, व्यापार आदि करने वाले लोग सामाजिक संगठन बना कर रहते हैं, जिस (भूमि) में ये साँस लेते (प्राणत्) प्राणी चलते-फिरते हैं; वह मातृभूमि हमें प्रथम भोज्य पदार्थ (खाद्य-पेय) प्रदान करे।

(2)

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सं बभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु॥

अन्वय–यस्याः पृथिव्याः चतस्रः प्रदिशः, यस्याम् अन्नं कृष्टयः सं बभूवुः, या बहुधा प्राणदेजत् बिभर्ति, सा भूमिः नः गोषु अपि अन्ने दधातु।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ प्रदान करने की मंगल-कामना की गई है।

हिन्दी-अनुवाद–जिस भूमि में चार दिशाएँ तथा उपदिशाएँ अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ (फल, शाक आदि) उपजाती हैं; जहाँ कृषि-कार्य करने वाले सामाजिक संगठन बनाकर रहते हैं, जो (भूमि) अनेक प्रकार के प्राणियों (साँस लेने वालों तथा चलने-फिरने वाले जीवों) को धारण करती है, वह मातृभूमि हमें गौ आदि लाभप्रद पशुओं तथा खाद्य-पदार्थों के विषय में सम्पन्न बना दे।

(3)

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥

अन्वय–बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं जनं यथा औकसं बिभ्रती ध्रुवा इव अनपस्फुरन्ती धेनुः इव पृथिवी मे द्रविणस्य सहस्रं धारादुहाम्।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत मन्त्र हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' के 'मङ्गलम्' से उद्धृत किया गया है। इसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए हम सभी के लिए आवश्यक खाद्य-पदार्थ प्रदान करने की मंगल-कामना की गई है।

हिन्दी-अनुवाद–अनेक प्रकार से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों को मानने वाले जन-समुदाय को, एक ही घर में रहने वाले लोगों के समान, धारण करने वाली तथा कभी नष्ट न होने देने वाली स्थिर-जैसी यह पृथ्वी हमारे लिए धन की सहस्रों धाराओं का उसी प्रकार दोहन करे जैसे कोई गाय बिना किसी बाधा के दूध देती हो।

प्रथमः पाठः

भारतीवसन्तगीतिः

(सरस्वती का वसन्त-गान)

पाठ-परिचय—प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत-साहित्य के प्रख्यात कवि **पं. जानकी वल्लभ शास्त्री** की रचना '**काकली**' नामक गीत-संग्रह से संकलित है। इसमें सरस्वती की वन्दना करते हुए कामना की गई है कि हे सरस्वती! ऐसी वीणा बजाओ, जिससे मधुरमञ्जरियों से पीत पंक्तिवाले आम के वृक्ष, कोयल का कूजन, वायु का धीरे-धीरे बहना, अमराइयों में काले भ्रमरों का गुञ्जार और नदियों का (लीला के साथ बहता हुआ) जल, वसन्त ऋतु में मोहक हो उठे। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में लिखी गयी यह गीतिका एक नवीन चेतना का आवाहन करती है तथा ऐसे वीणास्वर की परिकल्पना करती है जो स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जनसमुदाय को प्रेरित करे।

अन्वय, कठिन-शब्दार्थ, सप्रसंग हिन्दी-अनुवाद/भावार्थ एवं पठितावबोधनम्—

(1) **निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्**
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम्।
मधुर-मञ्जरी-पिञ्जरी-भूत-मालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललित-कोकिला-काकलीनाम्॥ 1॥
निनादय...॥

अन्वय—अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय। ललित-नीति-लीनां गीतिं मृदुं गाय। इह वसन्ते मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः सरसाः रसालाः लसन्ति। ललित-कोकिला-काकलीनां कलापाः (विलसन्ति)। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

कठिन-शब्दार्थ—अये वाणि! = हे सरस्वती!। **नवीनां** = नवीन (नूतनाम्)। **निनादय** = बजाओ/गुंजित करो (नितरां वादय)। **ललितनीतिलीनाम्** = सुन्दर नीतियों से युक्त (सुन्दरनीतिसंलग्नाम्)। **मृदुम्** = कोमल (मधुरं, चारुः)। **गाय** = गाओ (स्तु)। **इह** = यहाँ (अत्र)। **वसन्ते** = वसन्त-काल में। **मञ्जरी** = आम्रपुष्प (आम्रकुसुमम्)। **पिञ्जरीभूतमालाः** = पीले वर्ण से युक्त पंक्तियाँ (पीतपङ्क्तयः)। **सरसाः** = मधुर (रसपूर्णाः)। **रसालाः** = आम के वृक्ष (आम्राः)। **लसन्ति** = सुशोभित हो रही हैं (शोभन्ते)। **ललित** = मनोहर (मनोहरः)। **कोकिलाकाकलीनां** = कोयलों की आवाज (कोकिलानां ध्वनिः)। **कलापाः** = समूह (समूहाः)।

प्रसङ्ग—प्रस्तुत गीति (पद्यांश) हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'भारतीवसन्तगीतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के प्रसिद्ध गीत-संग्रह 'काकली' से संकलित किया गया है। इसमें वाणी की देवी सरस्वती की वन्दना करते हुए वसन्तकालीन मनमोहक तथा अद्‌भुत प्राकृतिक शोभा का वर्णन किया गया है।

हिन्दी-अनुवाद—हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ। सुन्दर नीतियों से युक्त गीत मधुरता से गाओ। इस वसन्त-काल में मधुर आम्र-पुष्पों से पीली बनी हुई सरस आम के वृक्षों की पंक्तियाँ सुशोभित हो रही हैं और उन पर बैठी हुई एवं मधुर ध्वनियाँ करती हुई कोयलों के समूह भी सुशोभित हो रहे हैं। हे सरस्वती! आप नवीन वीणा बजाइए एवं मधुर गीत गाइए।

भावार्थ—भारत देश में वसन्त-ऋतु का अत्यधिक महत्त्व है। इस समय प्राकृतिक शोभा सभी के मन को सहज ही आकर्षित करती है। आम के वृक्षों पर मञ्जरियाँ सुशोभित होती हैं तथा उन पर बैठी हुई कोयल मधुर कूजन से सभी के मन को मोह लेती है। कवि ने यहाँ इसी प्राकृतिक सुषमा का सुन्दर वर्णन करते हुए वाग्देवी सरस्वती से नवीन वीणा बजाकर मधुर गीत सुनाने के लिए प्रार्थना की है।

पठित-अवबोधनम्—

निर्देशः—उपर्युक्तं पद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत—

प्रश्नाः— **I. एकपदेन उत्तरत—**

(i) वाणी कीदृशीं वीणां निनादयतु? (ii) रसालाः कीदृशाः लसन्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) कविः कीदृशीं गीतिं गातुं कथयति? (ii) वसन्ते केषां कलायाः लसन्ति?

III. भाषिककार्यम्-(i) 'सरसाः' इति विशेषणस्य पद्यांशे विशेष्यपदं किम्?

(ii) 'पिकाः' इत्यस्य पर्यायपदं पद्यांशात् चित्वा लिखत।

उत्तराणि- I. (i) नवीनाम्। (ii) सरसाः।

II. (i) कविः ललित-नीति-लीनां मृदुं गीतिं गातुं कथयति।

(ii) वसन्ते ललित-कोकिला-काकलीनां कलापाः लसन्ति।

III. (i) रसालाः। (ii) कोकिलाः।

(2)

वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे
नतां पङ्क्तिमालोक्य मधुमाधवीनाम्॥
निनादय... ॥

अन्वय-कलिन्दात्मजायाः सवानीरतीरे सनीरे समीरे मन्दमन्दं वहति (सति) मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अलोक्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

कठिन-शब्दार्थ-कलिन्दात्मजायाः = यमुना नदी के (यमुनायाः)। **सवानीरतीरे** = बेंत की लता से युक्त तट पर (वेतसयुक्ते तटे)। **सनीरे** = जल से पूर्ण (सजले)। **समीरे** = हवा में (वायौ)। **मन्दमन्दं** = धीरे-धीरे (शनैःशनैः)। **वहति** = बह रही है (चलति)। **मधुमाधवीनां** = मधुर मालती लताओं का (मधुमाधवीलतानाम्)। **नताम्** = झुकी हुई (नतिप्राप्ताम्)। **अलोक्य** = देखकर (दृष्ट्वा)।

प्रसङ्ग-प्रस्तुत गीति हमारी संस्कृत की पाठ्यपुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'भारतीवसन्तगीतिः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के प्रसिद्ध गीत-संग्रह 'काकली' से संकलित है। इसमें वाणी की देवी सरस्वती की वन्दना करते हुए यमुना नदी के तट पर झुकी हुई मधुर मालती लताओं की शोभा का चित्रण किया गया है। कवि कहता है कि-

हिन्दी-अनुवाद-बेंत की लताओं से युक्त यमुना नदी के तट पर जल-कणों से युक्त शीतल पवन के धीरे-धीरे बहते हुए तथा मधुर मालती की लताओं को झुकी हुई देखकर हे सरस्वती! आप कोई नवीन वीणा बजाइए।

भावार्थ-यहाँ कवि ने यमुना नदी के तट की वसन्तकालीन प्राकृतिक शोभा का मनोहारी चित्रण किया है। भारतीय संस्कृति के इस मनोहारी वैशिष्ट्य को दर्शाते हुए कवि ने भारतीय लोगों के हृदय में देश-प्रेम की भावना जागृत करने के लिए माता सरस्वती से नवीन वीणा की तान छेड़ने की प्रार्थना की है।

पठित-अवबोधनम्-

प्रश्नाः- I. एकपदेन उत्तरत-

(i) 'कलिन्दात्मजा' का वर्तते? (ii) कासां पङ्क्तिः नता वर्तते?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) कस्याः सवानीरतीरे वायुः मन्दमन्दं वहति? (ii) यमुनायाः तीरे कविः काम् अवलोकयितुं कथयति?

III. भाषिककार्यम्-

(i) 'समीरे' इत्यस्य विशेषणपदं किम्? (ii) 'शनैः शनैः' इत्यस्य पर्यायशब्दः कः?

उत्तराणि- I. (i) यमुनानदी। (ii) मधुमाधवीनाम्।

II. (i) यमुनायाः सवानीरतीरे वायुः मन्दमन्दं वहति।

(ii) यमुनायाः तीरे कविः मधुमाधवीनां नतां पङ्क्तिम् अवलोकयितुं कथयति।

III. (i) सनीरे। (ii) मन्दमन्दम्।

(3)

ललित-पल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मञ्जुकुञ्जे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलीनाम्॥
निनादय.... ॥

अन्वय–ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुञ्जे मञ्जुकुञ्जे मलय-मारुतोच्चुम्बिते स्वनन्तीम् अलीनां मलिनां ततिं प्रेक्ष्य अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

कठिन-शब्दार्थ–ललितपल्लवे = मन को आकर्षित करने वाले पत्ते (मनोहरपत्रे)। **पादपे** = वृक्ष पर (वृक्षे)। **पुष्पपुञ्जे** = पुष्पों के समूह पर (पुष्पसमूहे)। **मञ्जुकुञ्जे** = सुन्दर लताओं से आच्छादित स्थल पर (शोभनलताविताने)। **मलय-मारुतोच्चुम्बिते** = चन्दन वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किये गये पर (मलयानिलसंस्पृष्टे)। **स्वनन्तीम्** = ध्वनि करती हुई (ध्वनिं कुर्वन्तीम्)। **अलीनां** = भ्रमरों के (भ्रमराणाम्)। **मलिनाम्** = मलिन (कृष्णवर्णाम्)। **ततिम्** = पंक्ति को (पंक्तिम्)। **प्रेक्ष्य** = देखकर (दृष्ट्वा)।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत गीति हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'भारतीवसन्तगीतिः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के प्रसिद्ध गीत-संग्रह 'काकली' से संकलित है। इसमें वाणी की देवी सरस्वती की वन्दना करते हुए भारतवर्ष में वसन्तकालीन शोभा के प्रसंग में कवि ने पुष्पित वृक्षों पर गुञ्जार करते हुए भँवरों का रम्य वर्णन किया है। कवि माँ सरस्वती से कहता है कि–

हिन्दी-अनुवाद–चन्दन-वृक्ष की सुगन्धित वायु से स्पर्श किये गये, मन को आकर्षित करने वाले पत्तों से युक्त वृक्षों, पुष्पों के समूह तथा सुन्दर कुञ्जों पर काले भौंरों की गुञ्जार करती हुई पंक्ति को देखकर, हे सरस्वती! नवीन वीणा को बजाओ।

भावार्थ–इस गीतिका में कवि ने भारत देश के हिमालयी प्रान्तों की महकती प्रकृति का सुन्दर चित्रण करते हुए वहाँ वसन्त के समय चन्दन वृक्षों के स्पर्श से शीतल व सुगन्धित वायु का, कोमल कोंपलों वाले पादपों, बगीचों तथा उन पर गुञ्जार करती भ्रमर-पंक्तियों का उल्लेख किया है।

पठित-अवबोधनम्–

प्रश्नाः– I. एकपदेन उत्तरत–

(i) पादपे कीदृशाणि पत्राणि सन्ति? (ii) पुष्पपुञ्जे केषां पंक्तिः ध्वनिं करोति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कीदृशे कुञ्जे अलीनां पंक्तिः दृश्यते? (ii) मलय-मारुतोच्चुम्बिते का ध्वनिं करोति?

III. भाषिककार्यम्–

(i) 'ततिम्' इत्यस्य विशेषणपदं किं प्रयुक्तम्? (ii) 'वृक्षे' इत्यर्थे अत्र किम् पदं प्रयुक्तम्?

उत्तराणि– I. (i) ललितपत्राणि। (ii) अलीनाम्।

II. (i) मञ्जुकुञ्जे अलीनां पंक्तिः दृश्यते।

(ii) मलय-मारुतोच्चुम्बिते अलीनां पंक्तिः ध्वनिं करोति।

III. (i) मलिनाम्। (ii) पादपे।

(4) लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्,
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम्॥
निनादय.....॥

अन्वय–तव अदीनां वीणाम् आकर्ण्य लतानां नितान्तं शान्तिशीलं सुमं चलेत् नदीनां कान्तसलिलं सलीलम् उच्छलेत्। अये वाणि! नवीनां वीणां निनादय।

कठिन-शब्दार्थ–अदीनाम् = ओजस्विनी (ओजस्विनीम्)। **आकर्ण्य** = सुनकर (श्रुत्वा)। **नितान्तम्** = पूर्णतया (अत्यधिकम्)। **शान्तिशीलम्** = शान्ति से युक्त (शान्तियुक्तम्)। **सुमम्** = पुष्प को (कुसुमम्)। **चलेत्** = चल पड़े, हिल उठे (गच्छेत्)। **कान्तसलिलम्** = स्वच्छ जल (मनोहरजलम्)। **सलीलम्** = क्रीड़ा करता हुआ (क्रीडासहितम्)। **उच्छलेत्** = उच्छलित हो उठे (ऊर्ध्वं गच्छेत्)।

प्रसङ्ग–प्रस्तुत गीति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी' (प्रथमो भागः) के 'भारतीवसन्तगीतिः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ पं. जानकी वल्लभ शास्त्री के प्रसिद्ध गीत-संग्रह 'काकली' से संकलित किया गया है। इसमें वसन्तकालीन शोभा का चित्रण करते हुए सरस्वती देवी से नवीन वीणा का निनाद छेड़ने की मंगल कामना की गई है। कवि कहता है कि–

अपठितावबोधनम्

[**ध्यातव्य**–विद्यार्थियों के बुद्धि परीक्षण तथा संस्कृत भाषा के अर्थावबोध की दृष्टि से अपठितावबोधन के अन्तर्गत सामान्यतः दो प्रकार के अनुच्छेद पूछे जाते हैं–

(क) बृहद् अनुच्छेद–इस प्रकार के अनुच्छेदों की सीमा लगभग 80–100 शब्दों तक की होती है।

(ख) लघु अनुच्छेद–इस प्रकार के अनुच्छेदों की सीमा लगभग 40–50 शब्दों तक निर्धारित की गई है।

उपर्युक्त दोनों प्रकार के अनुच्छेद किसी कथा, घटना, निबन्ध या महान् व्यक्ति पर आधारित होते हैं।

इन अनुच्छेदों के नीचे सम्बन्धित प्रश्न दिये हुए होते हैं, जिनका उत्तर अनुच्छेद को पढ़कर संस्कृत-भाषा में ही देना होता है। इन अनुच्छेदों पर निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं–

(i) अनुच्छेद का शीर्षक देना–अनुच्छेद को पढ़कर उसके प्रमुख भाव, घटना, व्यक्ति, पर्व आदि से सम्बन्धित एक-दो शब्दों में देना चाहिए।

(ii) एक शब्द में उत्तर देना–प्रश्नवाचक शब्द के स्थान पर अनुच्छेद में सम्बन्धित वाक्य के उत्तर को पहचान कर एक ही शब्द में उत्तर देना चाहिए।

(iii) पूर्ण वाक्य में उत्तर–इसी प्रकार पूछे गये प्रश्न का उत्तर अनुच्छेद में से देखकर पूर्ण वाक्य में देना चाहिए।

(iv) भाषिक-कार्य–इसके अन्तर्गत कर्ता, क्रिया, दोनों का अन्वय, विशेषण, विशेष्य, संज्ञा, सर्वनाम, पर्यायवाची, विलोम शब्द आदि का ज्ञान अपेक्षित है।]

(क) 80-100 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः

निर्देश–अधोलिखितगद्यांशान् पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत–

(1)

सताम् आचारः सदाचारः इति कथ्यते। सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचारो भवति। ते सर्वैः सह शिष्टतापूर्वकं व्यवहारं कुर्वन्ति। तेषु सत्याचरणं, वाक्संयमः, विनयः, अक्रोधः, क्षमा, धर्माचरणमित्यादयः सद्गुणाः दृश्यन्ते। सदाचारस्य सत्तयैव संसारे जनः उन्नतिं करोति। देशस्य, राष्ट्रस्य, समाजस्य, जनस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य महती आवश्यकता वर्तते। सदाचारेणैव जनाः ब्रह्मचारिणो भवन्ति। सदाचारेणैव शरीरं परिपुष्टं भवति। सदाचारेण बुद्धिः वर्धते। सदाचारेणैव मनुष्यः सत्यभाषणम् अन्यच्च सत्कर्म कर्तुं प्रवृत्तो भवति। अतएव पूर्वैः महर्षिभिः 'आचारः परमो धर्मः' इत्युक्तम्।

संसारे सर्वत्र सदाचारस्यैव महत्त्वं दृश्यते। ये सदाचारिणो भवन्ति, ते एव सर्वत्र आदरं लभन्ते। वेदरामायणमहाभारतेष्वपि सदाचारस्य महिमा वर्णितोऽस्ति। सदाचाराभावेनैव चतुर्वेदविदपि रावणो राक्षस इति कथ्यते। अतः सर्वैः जनैः स्वोन्नत्यै सदा सदाचारः पालनीयः।

प्रश्नाः–1. उपर्युक्त गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

2. एकपदेन उत्तरत–

(i) केषाम् आचारः सदाचारः इति कथ्यते?

(ii) के सर्वैः सह शिष्टतापूर्वकं व्यवहारं कुर्वन्ति?

(iii) केन बुद्धिः वर्धते?

(iv) संसारे सर्वत्र कस्य एव महत्त्वं दृश्यते?

3. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कया संसारे जनः उन्नतिं करोति?

(ii) केनैव जनाः ब्रह्मचारिणो भवन्ति?

(iii) 'आचारः परमो धर्मः' इति कैः उक्तम्?

4. भाषिककार्यम्–

(i) 'सदाचारेणैव शरीरं परिपुष्टं भवति' इत्यस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किमस्ति?

(ii) 'सर्वैः जनैः' इत्यनयोः पदयोः विशेषणपदं किम्?

(iii) 'क्रोधः' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

(iv) ''ते एव सर्वत्र आदरं.....।'' इति वाक्यस्य समुचितं क्रियापदं किम् प्रयुक्तम्?

उत्तराणि–1. सदाचारस्य महत्त्वम्।

2. (i) सताम्। (ii) सज्जनाः। (iii) सदाचारेण। (iv) सदाचारस्य।

3. (i) सदाचारस्य सत्तया संसारे जनः उन्नतिं करोति।

(ii) सदाचारेणैव जनाः ब्रह्मचारिणो भवन्ति।

(iii) 'आचारः परमो धर्मः' इति पूर्वैः महर्षिभिः उक्तम्।

4. (i) शरीरम्। (ii) सर्वैः। (iii) अक्रोधः। (iv) लभन्ते।

(2)

सतां जनानां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते। मानवः यादृशै सह वसति तादृशः एव भवति। सज्जनानां सम्पर्केण मनुष्यः सज्जनः भवति उन्नतिं महत्पदं च अलंकरोति। दुर्जनानां संगत्या मनुष्यो दुर्जनो भवति, पतनं विनाशं च प्राप्नोति। अतः मनुष्यस्योपरि संगतेः महान् प्रभावो भवति।

बाल्यकाले विशेषतो बालकस्योपरि संसर्गस्य प्रभावो भवति। ये यादृशैः बालकैः सह उपविशन्ति, उत्तिष्ठन्ति, खादन्ति, पिबन्ति च ते तथैव स्वभावं धारयन्ति। अतः बाल्यकाले दुर्जनैः सह संगतिः कदापि न करणीया।

सज्जनानां संगत्या मनुष्यः उन्नतिं प्राप्नोति। तस्य विद्या कीर्तिश्च वर्धेते। दुर्जनानां संसर्गेण बहवः हानयः भवन्ति, यथा–दुर्जनसंसर्गेण मनुष्योऽसद्वृत्तो भवति, दुर्विचारयुक्तो भवति, तस्य बुद्धिर्दूषिता भवति, अतः बुद्धिः क्षीयते, मनुष्यः दुर्व्यसनग्रस्तो च भवति। अतस्तस्य शरीरं क्षीणं निर्बलं च भवति। तस्य कीर्तिः नश्यति, सर्वत्रानादरो च भवति।

अतः स्वयशोवृद्धये ज्ञानवृद्धये सुखस्य शान्तेश्च प्राप्त्यर्थं सर्वैरपि सर्वदा सत्संगतिः करणीया, दुर्जनसंगतिः सदा परिहर्तव्या।

प्रश्नाः– 1. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

2. एकपदेन उत्तरत–

(i) केषां सम्पर्केण मनुष्यः सज्जनः भवति?

(ii) मनुष्योपरि कस्याः महान् प्रभावो भवति?

(iii) बाल्यकाले कैः सह संगतिः कदापि न करणीया?

(iv) सज्जनानां संगत्या मनुष्यः किं प्राप्नोति?

3. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) का सत्संगतिः कथ्यते?

(ii) दुर्जनानां संगत्या मनुष्यः किम् प्राप्नोति?

(iii) कस्य संसर्गेण मनुष्योऽसद्वृत्तो भवति?

4. भाषिककार्यम्–

(i) 'ये यादृशैः बालकैः सह उपविशन्ति' इत्यस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

(ii) 'सज्जनानाम्' इति पदस्य अनुच्छेदे विलोमपदं किम् प्रयुक्तम्?

(iii) 'तस्य कीर्तिः नश्यति' इत्यस्मिन् वाक्ये सर्वनामपदस्थाने संज्ञापदं किम्?

(iv) 'क्षीणं निर्बलम्' इति विशेषणपदयोः विशेष्यम् किम्?

उत्तराणि–1. सत्संगतिः/सत्सङ्गतेः महत्त्वम्।

2. (i) सज्जनानाम्। (ii) सङ्गतेः। (iii) दुर्जनैः। (iv) उन्नतिम्।

3. (i) सतां जनानां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते।